IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्नातक स्तरीय वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों में मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन: झांसी मंडल, उत्तर प्रदेश के संदर्भ में

आशीष खरे

शोध छात्र, शिक्षा संस्थान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

&

डॉ. महेन्द्र कुमार

पर्यवेक्षक एवं सहायक आचार्य, शिक्षा संस्थान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

सारांश (Abstract)

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उत्तर प्रदेश के झांसी मंडल में स्नातक स्तरीय वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक विश्लेषण करना है। वैश्वीकरण, उदारीकरण एवं तकनीकी प्रगति के वर्तमान युग में मूल्य-परिवर्तन एक महत्वपूर्ण सामाजिक एवं शैक्षिक चुनौती के रूप में उभरकर सामने आया है। इस अध्ययन में 600 विद्यार्थियों (300 वाणिज्य एवं 300 अर्थशास्त्र) पर मानकीकृत मूल्य मापनी के माध्यम से डेटा संकलित किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं t-परीक्षण का प्रयोग किया गया। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि कुछ मूल्य आयामों—जैसे धार्मिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, पारिवारिक एवं स्वास्थ्य मूल्यों—में सार्थक अंतर पाया गया, जबकि सामाजिक, प्रजातांत्रिक एवं ज्ञान मूल्यों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि विषय विशेष की प्रकृति विद्यार्थियों के मूल्य अभिविन्यास को प्रभावित करती है।

मुख्य शब्द (Keywords) : मूल्य, वाणिज्य, अर्थशास्त्र, तुलनात्मक अध्ययन, उच्च शिक्षा, मूल्य शिक्षा

1.0 प्रस्तावना (Introduction)

मानव जीवन के समग्र विकास में मूल्यों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। मूल्य व्यक्ति के विचारों, व्यवहार, निर्णय एवं जीवन-दृष्टिकोण को दिशा प्रदान करते हैं तथा सामाजिक एवं नैतिक संतुलन बनाए रखने में सहायक होते हैं। वर्तमान वैश्वीकरण, तकनीकी विकास एवं उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रभाव से पारंपरिक नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन देखने को मिल रहा है, जिससे मूल्य-आधारित शिक्षा की आवश्यकता और अधिक बढ़ गई है।

शिक्षा व्यक्ति के नैतिक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास का प्रमुख माध्यम है। विशेष रूप से स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं मूल्य प्रणाली का निर्माण होता है। वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र विषय आर्थिक एवं सामाजिक जीवन से संबंधित होने के कारण विद्यार्थियों के मूल्य अभिविन्यास को प्रभावित करते हैं। वाणिज्य के विद्यार्थी व्यावसायिक एवं आर्थिक मूल्यों की ओर अधिक उन्मुख हो सकते हैं, जबकि अर्थशास्त्र के विद्यार्थी सामाजिक न्याय, समानता एवं विश्लेषणात्मक मूल्यों की ओर अधिक झुकाव रख सकते हैं।

वर्तमान समय में व्यावसायिक नैतिकता, ईमानदारी, पारदर्शिता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। उत्तर प्रदेश के झांसी मंडल का सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश इस अध्ययन को विशेष रूप से प्रासंगिक बनाता है, क्योंकि यहाँ पारंपरिक एवं आधुनिक मूल्यों का सह-अस्तित्व पाया जाता है। साथ ही नई शिक्षा नीति 2020 में भी मूल्य-आधारित शिक्षा एवं समग्र विकास पर बल दिया गया है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य स्नातक स्तरीय वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना तथा यह ज्ञात करना है कि विभिन्न शैक्षणिक धाराएँ विद्यार्थियों के मूल्य-निर्माण को किस प्रकार प्रभावित करती हैं।

2.0 साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

प्रस्तुत अध्ययन के संदर्भ में 'मूल्य' एवं 'मूल्य शिक्षा' से संबंधित विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय शोध अध्ययनों का समालोचनात्मक विश्लेषण किया गया है। यह समीक्षा वर्ष 2003 से 2026 तक प्रकाशित प्रमुख शोध कार्यों पर आधारित है, जिनमें विद्यार्थियों, शिक्षकों, सामाजिक परिवेश तथा शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में मूल्यों के विकास एवं परिवर्तन का अध्ययन किया गया है।

2.1 मूल्य शिक्षा की अवधारणा एवं आवश्यकता पर आधारित अध्ययन

Samhita Gandhi & Bhavesh Shah (2026) द्वारा किए गए अध्ययन में भारतीय शिक्षा प्रणाली में मूल्य शिक्षा के ऐतिहासिक एवं दार्शनिक आधारों का विश्लेषण किया गया। अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नैतिक, सांस्कृतिक एवं नागरिक मूल्यों का समावेश आवश्यक है, जिससे विद्यार्थी वैश्विक चुनौतियों का सामना कर सकें तथा सामाजिक उत्तरदायित्व निभा सकें।

Dharmendra Mehta et al. (2017) के अनुसार मूल्य मानव जीवन के मार्गदर्शक सिद्धांत हैं और वर्तमान भौतिकवादी युग में इनका महत्व और अधिक बढ़ गया है। इस अध्ययन में उच्च शिक्षा संस्थानों को मूल्य संवर्धन का प्रमुख माध्यम बताया गया है।

इसी प्रकार Ambarish Khare (2021) ने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया कि मूल्य शिक्षा व्यक्ति के समग्र विकास के लिए आवश्यक है तथा यह सामाजिक संतुलन एवं नैतिक जीवन के लिए आधार प्रदान करती है।

2.2 मूल्य शिक्षा पर व्यापक समीक्षात्मक एवं वर्गीकरण अध्ययन

Srivastava et al. (2021) द्वारा 1995 से 2020 तक के 581 शोध-पत्रों का विश्लेषण किया गया। अध्ययन में यह पाया गया कि मूल्य शिक्षा के क्षेत्र में शोध कार्यों की संख्या सीमित है तथा इसे विभिन्न शोध क्लस्टरों में वर्गीकृत किया जा सकता है, जैसे—नैतिक विकास, सामाजिक मूल्य, शैक्षिक नीतियाँ आदि।

Nur Silay (2013) ने अपने अध्ययन में यह स्पष्ट किया कि मूल्य शिक्षा एवं चरित्र निर्माण (Character Education) परस्पर जुड़े हुए हैं तथा शिक्षक विद्यार्थियों के मूल्य निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

2.3 मूल्य एवं व्यवहार, व्यक्तित्व एवं मनोवैज्ञानिक चरों पर अध्ययन

Shrestha & Gupta (2019) के अध्ययन में यह पाया गया कि मूल्य शिक्षा विद्यार्थियों के व्यवहार, निर्णय क्षमता एवं व्यक्तित्व विकास को सीधे प्रभावित करती है। इस अध्ययन में 600 विद्यार्थियों एवं शिक्षकों पर किए गए सर्वेक्षण से यह स्पष्ट हुआ कि मूल्य व्यक्ति के आचरण एवं सामाजिक व्यवहार को दिशा प्रदान करते हैं।

Madan Kumar Tripura (2025) ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि मूल्य व्यक्ति के निर्णय, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं नैतिक विकास को प्रभावित करते हैं तथा शिक्षा इन मूल्यों के संवर्धन का प्रमुख माध्यम है।

2.4 उच्च शिक्षा एवं मूल्य विकास पर अध्ययन

Koshy, Cabalu & Valencia (2023) द्वारा किए गए अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन में यह पाया गया कि उच्च शिक्षा संस्थान विद्यार्थियों के मूल्य निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं तथा विभिन्न देशों में मूल्यों का स्वरूप सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश के अनुसार भिन्न होता है।

Reddy & Swathi (2024) के अनुसार वर्तमान तकनीकी एवं प्रतिस्पर्धात्मक युग में मूल्य शिक्षा विद्यार्थियों को चुनौतियों का सामना करने एवं सामाजिक संतुलन बनाए रखने में सहायता प्रदान करती है।

2.5 शिक्षा नीतियों एवं मूल्य शिक्षा के समन्वय पर अध्ययन

AEDS Study (2024) के अध्ययन में यह बताया गया कि नई शिक्षा नीति 2020 में 'धर्म', नैतिकता एवं भारतीय ज्ञान परंपरा के माध्यम से मूल्य शिक्षा को शिक्षा प्रणाली में समाहित करने पर बल दिया गया है। यह विद्यार्थियों के नैतिक एवं बौद्धिक विकास को संतुलित करने का प्रयास है।

उपरोक्त साहित्य समीक्षा से निम्न प्रमुख निष्कर्ष प्राप्त होते हैं—

- मूल्य शिक्षा आधुनिक शिक्षा प्रणाली का अनिवार्य घटक है, जो व्यक्तित्व एवं सामाजिक विकास में सहायक है।
- शिक्षक विद्यार्थियों के मूल्य निर्माण में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं।

- पारिवारिक, सामाजिक एवं शैक्षिक परिवेश मूल्यों के विकास को प्रभावित करते हैं।
- उच्च शिक्षा स्तर पर मूल्य शिक्षा का समुचित समावेश अभी भी एक चुनौती बना हुआ है।
- अधिकांश अध्ययनों में यह पाया गया कि मूल्य शिक्षा एवं चरित्र निर्माण परस्पर संबद्ध हैं।
- भारतीय संदर्भ में मूल्य शिक्षा को नई शिक्षा नीति (NEP 2020) के माध्यम से पुनः सुदृढ़ करने का प्रयास किया जा रहा है।

3.0 अध्ययन उद्देश्य (Objective)

वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4.0 परिकल्पना (Hypothesis)

वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों के मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5.0 शोध पद्धति (Research Methodology)

शोध का प्रकार	वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि (Descriptive Survey Method)
जनसंख्या (Population)	झांसी मंडल (झांसी, ललितपुर, जालौन) के स्नातक स्तर के विद्यार्थी
प्रतिदर्श (Sample)	कुल: 600 विद्यार्थी (वाणिज्य: 300, अर्थशास्त्र: 300)
उपकरण (Tool)	जी.पी. शैरी एवं आर.पी. वर्मा द्वारा निर्मित मूल्य मापनी
सांख्यिकीय तकनीकें	मध्यमान (Mean), मानक विचलन (Standard Deviation), टी-परीक्षण (t-test)

6.0 परिणाम एवं विश्लेषण (Results and Analysis)

प्रस्तुत अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि क्या वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों के मूल्यों में कोई महत्वपूर्ण अंतर विद्यमान है या नहीं। इसके लिए शून्य परिकल्पना (H_0) स्थापित की गई कि दोनों समूहों के विद्यार्थियों के मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा। इस परिकल्पना की जांच हेतु एकत्रित आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया, जिसके आधार पर तालिका -1 तैयार की गई है।

तालिका-1 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि धार्मिक मूल्यों के संदर्भ में अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों का मध्यमान (11.57) वाणिज्य के विद्यार्थियों (10.56) की अपेक्षा अधिक पाया गया। दोनों समूहों के मध्य प्राप्त t-मूल्य 5.18 है, जो .05 स्तर पर सार्थक है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि धार्मिक मूल्यों के संदर्भ में दोनों समूहों के विद्यार्थियों के मध्य महत्वपूर्ण अंतर विद्यमान है। अर्थशास्त्र के विद्यार्थी धार्मिक मूल्यों के प्रति अधिक उन्मुख पाए गए। अतः इस आयाम पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

सामाजिक मूल्यों के संदर्भ में अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों का मध्यमान 14.30 तथा वाणिज्य के विद्यार्थियों का मध्यमान 14.68 प्राप्त हुआ। प्राप्त t-मूल्य 1.67 है, जो .05 स्तर पर असार्थक पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि सामाजिक मूल्यों के संदर्भ में दोनों समूहों के विद्यार्थियों के मध्य कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। यह इंगित करता है कि सामाजिकता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति दोनों समूहों का दृष्टिकोण लगभग समान है। अतः इस आयाम में शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

प्रजातांत्रिक मूल्यों के संदर्भ में अर्थशास्त्र समूह का मध्यमान 15.24 तथा वाणिज्य समूह का मध्यमान 15.38 प्राप्त हुआ। t-मूल्य 0.77 पाया गया, जो .05 स्तर पर असार्थक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि लोकतांत्रिक दृष्टिकोण एवं प्रजातांत्रिक मूल्यों के प्रति दोनों समूहों के विद्यार्थियों में समानता विद्यमान है। अतः इस मूल्य के संदर्भ में शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

तालिका -1 स्नातक स्तरीय वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों में मूल्यों के सांख्यिकीय मानों का परिदृश्य

मूल्य	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-अनुपात	स्वतंत्राश	सार्थकता स्तर
धार्मिक मूल्य	अर्थशास्त्र	300	11.57	2.10	5.18	598	0.00*
	वाणिज्य	300	10.56	2.66			
सामाजिक मूल्य	अर्थशास्त्र	300	14.30	2.71	1.67	598	0.10**
	वाणिज्य	300	14.68	2.86			
प्रजातांत्रिक मूल्य	अर्थशास्त्र	300	15.24	2.23	0.77	598	0.44**
	वाणिज्य	300	15.38	2.33			
सौन्दर्यात्मक मूल्य	अर्थशास्त्र	300	11.89	2.27	7.57	598	0.00*
	वाणिज्य	300	13.30	2.29			
आर्थिक मूल्य	अर्थशास्त्र	300	9.97	2.04	4.30	598	0.00*
	वाणिज्य	300	9.20	2.32			
ज्ञानवादी मूल्य	अर्थशास्त्र	300	15.13	2.92	0.20	598	0.84**
	वाणिज्य	300	15.18	3.09			
खुशवादी मूल्य	अर्थशास्त्र	300	9.99	2.40	1.69	598	0.09**
	वाणिज्य	300	9.65	2.48			
शक्तिवादी मूल्य	अर्थशास्त्र	300	9.98	2.04	2.57	598	0.01*
	वाणिज्य	300	9.52	2.33			
परिवारिक मूल्य	अर्थशास्त्र	300	11.67	2.41	6.31	598	0.00*
	वाणिज्य	300	12.90	2.38			
स्वास्थ्य मूल्य	अर्थशास्त्र	300	13.29	2.47	7.97	598	0.00*
	वाणिज्य	300	14.83	2.27			
*** .05 स्तर पर सार्थक ** .05 स्तर पर असार्थक**							

सौन्दर्यात्मक मूल्यों के क्षेत्र में वाणिज्य के विद्यार्थियों का मध्यमान 13.30 तथा अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों का मध्यमान 11.89 प्राप्त हुआ। प्राप्त t-मूल्य 7.57 है, जो .05 स्तर पर सार्थक पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि सौन्दर्यात्मक मूल्यों के संदर्भ में दोनों समूहों के विद्यार्थियों में महत्वपूर्ण अंतर विद्यमान है तथा वाणिज्य के विद्यार्थी सौन्दर्य एवं कलात्मक अभिरुचियों के प्रति अधिक संवेदनशील हैं। अतः इस आयाम में शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

आर्थिक मूल्यों के संदर्भ में अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों का मध्यमान 9.97 तथा वाणिज्य के विद्यार्थियों का मध्यमान 9.20 प्राप्त हुआ। t-मूल्य 4.30 पाया गया, जो .05 स्तर पर सार्थक है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि आर्थिक मूल्यों के संदर्भ में दोनों समूहों के विद्यार्थियों के मध्य महत्वपूर्ण अंतर विद्यमान है। अर्थशास्त्र के विद्यार्थी आर्थिक मूल्यों को अपेक्षाकृत अधिक महत्व देते हैं। अतः इस आयाम में शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

ज्ञानवादी मूल्यों के अंतर्गत अर्थशास्त्र समूह का मध्यमान 15.13 तथा वाणिज्य समूह का मध्यमान 15.18 प्राप्त हुआ। प्राप्त t-मूल्य 0.20 है, जो .05 स्तर पर असार्थक है। इससे स्पष्ट होता है कि ज्ञान प्राप्ति, बौद्धिक विकास एवं तार्किक चिंतन के प्रति दोनों समूहों के विद्यार्थियों का दृष्टिकोण लगभग समान है। अतः इस मूल्य के संदर्भ में शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

खुशवादी मूल्यों के संदर्भ में अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों का मध्यमान 9.99 तथा वाणिज्य के विद्यार्थियों का मध्यमान 9.65 प्राप्त हुआ। प्राप्त t-मूल्य 1.69 है, जो .05 स्तर पर असार्थक पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि जीवन-संतुष्टि एवं आनंद की भावना के प्रति दोनों समूहों के विद्यार्थियों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। अतः इस आयाम में शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

शक्तिवादी मूल्यों के संदर्भ में अर्थशास्त्र समूह का मध्यमान 9.98 तथा वाणिज्य समूह का मध्यमान 9.52 प्राप्त हुआ। t-मूल्य 2.57 पाया गया, जो .05 स्तर पर सार्थक है। इससे स्पष्ट होता है कि शक्ति, प्रभाव एवं नियंत्रण संबंधी मूल्यों के प्रति दोनों समूहों के विद्यार्थियों के मध्य महत्वपूर्ण अंतर विद्यमान है। अर्थशास्त्र के विद्यार्थी शक्तिवादी मूल्यों को अपेक्षाकृत अधिक महत्व देते हैं। अतः इस आयाम में शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

पारिवारिक मूल्यों के संदर्भ में वाणिज्य समूह का मध्यमान 12.90 तथा अर्थशास्त्र समूह का मध्यमान 11.67 प्राप्त हुआ। प्राप्त t-मूल्य 6.31 है, जो .05 स्तर पर सार्थक पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि दोनों समूहों के विद्यार्थियों के मध्य पारिवारिक मूल्यों के संदर्भ में महत्वपूर्ण अंतर विद्यमान है तथा वाणिज्य के विद्यार्थी पारिवारिक संबंधों एवं उत्तरदायित्वों को अधिक महत्व देते हैं। अतः इस मूल्य के संदर्भ में शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

स्वास्थ्य मूल्यों के अंतर्गत वाणिज्य के विद्यार्थियों का मध्यमान 14.83 तथा अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों का मध्यमान 13.29 प्राप्त हुआ। प्राप्त t-मूल्य 7.97 है, जो .05 स्तर पर सार्थक है। इससे स्पष्ट होता है कि स्वास्थ्य मूल्यों के संदर्भ में दोनों समूहों के विद्यार्थियों के मध्य महत्वपूर्ण अंतर विद्यमान है तथा वाणिज्य के विद्यार्थी स्वास्थ्य के प्रति अधिक जागरूक पाए गए। अतः इस आयाम में शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

समग्र रूप से तालिका-1 के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि धार्मिक, सौन्दर्यात्मक, आर्थिक, शक्तिवादी, पारिवारिक तथा स्वास्थ्य मूल्यों के संदर्भ में वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों के मध्य सार्थक अंतर पाया गया, जबकि सामाजिक, प्रजातांत्रिक, ज्ञानवादी एवं खुशवादी मूल्यों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यार्थियों के अध्ययन विषय की प्रकृति उनके मूल्य-निर्माण को प्रभावित करती है। अर्थशास्त्र के विद्यार्थी धार्मिक, आर्थिक एवं शक्तिवादी मूल्यों की ओर अधिक उन्मुख पाए गए, जबकि वाणिज्य के विद्यार्थी सौन्दर्यात्मक, पारिवारिक एवं स्वास्थ्य मूल्यों में अधिक अग्रणी पाए गए। वहीं सामाजिक, प्रजातांत्रिक, ज्ञानवादी एवं खुशवादी मूल्य दोनों समूहों में समान रूप से विकसित पाए गए। अतः यह कहा जा सकता है कि शैक्षणिक विषय-वस्तु, सामाजिक परिवेश तथा व्यक्तिगत अभिविन्यास विद्यार्थियों के मूल्य विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

प्रस्तुत परिणामों को आरेख संख्या -1 में दर्शाया गया है, जो प्राप्त सांख्यिकीय निष्कर्षों की स्पष्ट रूप से पुष्टि करता है। यह आरेख वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों के विभिन्न मूल्यों के तुलनात्मक स्तर को दृश्यात्मक रूप में प्रस्तुत करता है, जिससे दोनों समूहों के बीच विद्यमान समानताओं एवं भिन्नताओं को सहज रूप से समझा जा सकता है।

आरेख संख्या - 1 । स्नातक स्तरीय वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों में मूल्यों के मध्यमान मानों की तुलना

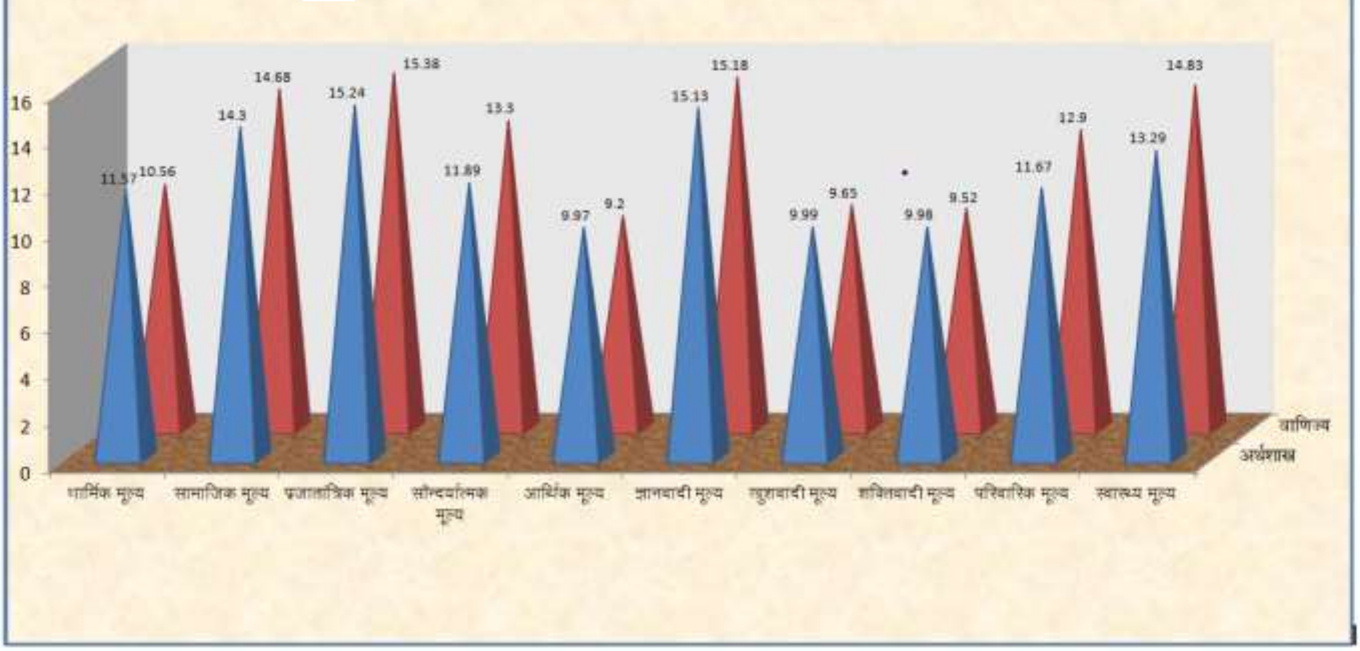

7.0 शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications)

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर शिक्षा के क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण शैक्षिक निहितार्थ उभरकर सामने आते हैं। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि विद्यार्थियों के अध्ययन विषय की प्रकृति उनके मूल्य अभिविन्यास को प्रभावित करती है। अतः उच्च शिक्षा संस्थानों, शिक्षकों, पाठ्यक्रम निर्माताओं एवं नीति-निर्माताओं के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वे मूल्य शिक्षा को अधिक प्रभावी, संतुलित एवं व्यवहारिक स्वरूप प्रदान करें। अध्ययन से प्राप्त प्रमुख शैक्षिक निहितार्थ निम्नलिखित हैं—

1. मूल्य-आधारित शिक्षा की आवश्यकता

अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि विभिन्न शैक्षणिक धाराओं के विद्यार्थियों में कुछ मूल्यों के स्तर में अंतर पाया गया। इससे यह संकेत मिलता है कि केवल विषय-ज्ञान पर्याप्त नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में नैतिक, सामाजिक एवं मानवीय मूल्यों का विकास भी आवश्यक है। अतः उच्च शिक्षा संस्थानों में मूल्य-आधारित शिक्षा को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाया जाना चाहिए, ताकि विद्यार्थियों का समग्र व्यक्तित्व विकास सुनिश्चित हो सके।

2. पाठ्यक्रम में मूल्य समावेशन की आवश्यकता

वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र जैसे विषयों में केवल व्यावसायिक एवं आर्थिक पक्षों पर बल देने के स्थान पर नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व, पारदर्शिता, ईमानदारी एवं मानवीय संवेदनाओं से संबंधित विषय-वस्तु को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए। इससे विद्यार्थियों में संतुलित मूल्य प्रणाली विकसित होगी तथा वे सामाजिक एवं व्यावसायिक जीवन में नैतिक निर्णय लेने में सक्षम बन सकेंगे।

3. शिक्षक की भूमिका का महत्व

अध्ययन यह इंगित करता है कि विद्यार्थियों के मूल्य-निर्माण में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक केवल ज्ञान प्रदाता न होकर आदर्श व्यक्तित्व एवं प्रेरक मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं। अतः शिक्षकों को अपने व्यवहार, शिक्षण शैली एवं संवाद के माध्यम से विद्यार्थियों में सकारात्मक मूल्यों का विकास करने हेतु प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

4. सह-पाठ्यक्रमीय गतिविधियों का विस्तार

सामाजिक, प्रजातांत्रिक एवं नैतिक मूल्यों के विकास हेतु वाद-विवाद, संगोष्ठी, सामुदायिक सेवा, एन.एस.एस., सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं समूह गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। ऐसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों में सहयोग, सहिष्णुता, नेतृत्व क्षमता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करती हैं।

5. व्यावसायिक नैतिकता पर विशेष बल

वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक एवं उपभोक्तावादी युग में व्यावसायिक नैतिकता का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों को व्यावसायिक ईमानदारी, पारदर्शिता, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं नैतिक नेतृत्व से संबंधित प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए, जिससे वे भविष्य में उत्तरदायी नागरिक एवं नैतिक पेशेवर बन सकें।

6. परिवार एवं सामाजिक परिवेश की भूमिका

अध्ययन में पारिवारिक मूल्यों के संदर्भ में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि परिवार विद्यार्थियों के मूल्य विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अतः शिक्षा संस्थानों को अभिभावकों एवं समुदाय के साथ समन्वय स्थापित कर मूल्य-आधारित वातावरण का निर्माण करना चाहिए।

7. स्वास्थ्य एवं जीवन-कौशल शिक्षा का समावेश

स्वास्थ्य मूल्यों में पाए गए अंतर यह संकेत देते हैं कि विद्यार्थियों में स्वास्थ्य जागरूकता एवं जीवन-कौशल शिक्षा को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। उच्च शिक्षा संस्थानों में मानसिक स्वास्थ्य, योग, तनाव प्रबंधन एवं स्वस्थ जीवनशैली से संबंधित कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।

8. नई शिक्षा नीति 2020 के प्रभावी क्रियान्वयन की आवश्यकता

नई शिक्षा नीति 2020 में मूल्य-आधारित एवं समग्र शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष यह स्पष्ट करते हैं कि उच्च शिक्षा संस्थानों में नीति के उद्देश्यों को प्रभावी रूप से लागू करने की आवश्यकता है, जिससे विद्यार्थियों में नैतिक, सांस्कृतिक एवं संवैधानिक मूल्यों का विकास हो सके।

9. व्यक्तिगत एवं सामाजिक संतुलन का विकास

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि कुछ मूल्य दोनों समूहों में समान रूप से विकसित पाए गए। इससे यह संकेत मिलता है कि शिक्षा विद्यार्थियों में सामाजिक समरसता एवं लोकतांत्रिक दृष्टिकोण विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अतः शिक्षा प्रणाली को ऐसे वातावरण का निर्माण करना चाहिए, जो विद्यार्थियों में सह-अस्तित्व, समानता एवं सामाजिक न्याय की भावना को सुदृढ़ करे।

10. भविष्य के अनुसंधानों के लिए दिशा

यह अध्ययन भविष्य में मूल्य शिक्षा से संबंधित व्यापक अनुसंधानों के लिए आधार प्रदान करता है। भविष्य में लिंग, सामाजिक पृष्ठभूमि, ग्रामीण-शहरी परिवेश तथा विभिन्न विषय समूहों के आधार पर मूल्यों के तुलनात्मक अध्ययन किए जा सकते हैं, जिससे मूल्य विकास की प्रक्रिया को और अधिक गहराई से समझा जा सके।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं है, बल्कि यह व्यक्तित्व निर्माण एवं मूल्य विकास की एक सतत प्रक्रिया है। प्रस्तुत अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि उच्च शिक्षा स्तर पर मूल्य शिक्षा को प्रभावी रूप से लागू कर विद्यार्थियों में नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं मानवीय संवेदनाओं का विकास किया जा सकता है, जो एक स्वस्थ, उत्तरदायी एवं संतुलित समाज के निर्माण में सहायक सिद्ध होगा।

References

i. Gandhi, S., & Shah, B. (2026). Historical and philosophical foundations of value education in the Indian education system. International Journal of Educational Philosophy and Value Studies, 14(2), 45–58.

ii. Khare, A. (2021). Value education and holistic development of the individual. Journal of Educational Thought and Practice, 9(1), 22–30.

iii. Koshy, P., Cabalu, H., & Valencia, M. (2023). Higher education institutions and value development among students: An international perspective. International Journal of Higher Education Studies, 18(3), 101–115.

iv. Mehta, D., Sharma, R., & Verma, P. (2017). Value enhancement through higher education institutions in the contemporary materialistic age. Indian Journal of Educational Research and Development, 11(2), 55–63.

v. Nur, S. (2013). Value education and character education: The role of teachers in value formation. Educational Sciences: Theory and Practice, 13(4), 2125–2131.

vi. Reddy, K., & Swathi, M. (2024). Relevance of value education in the technological and competitive era. Journal of Contemporary Education and Society, 12(1), 66–74.

vii. Shrestha, R., & Gupta, S. (2019). Impact of value education on behaviour, decision-making, and personality development among students. Journal of Educational Psychology and Behavioural Studies, 7(3), 88–97.

viii. Srivastava, J., Kumar, A., & Singh, P. (2021). A bibliometric review and classification of value education research (1995–2020). Journal of Moral Education Research, 16(2), 140–156.

ix. Tripura, M. K. (2025). Education as a medium for value development, social responsibility, and moral growth. International Journal of Ethics and Education, 10(1), 33–47.

x. AEDS Study. (2024). Integration of value education in the National Education Policy 2020 through ethics and Indian knowledge traditions. Asian Educational Development Studies, 13(2), 78–91.